Meeting God Every Morning
परमेश्वर से हर सुबह मुलाकात करना
कार्ल एच स्टीवेंस जूनियर
CARL H. STEVENS JR.
Grace Publications

परमेश्वर से हर सुबह मुलाकात करना

कार्ल एच स्टीवेंस जूनियर

स्वर्गीय कार्ल एच स्टीवेंस जूनियर सन २००५ तक ग्रेटर ग्रेस वर्ल्ड आउटरीच बाल्टीमोर, मेरीलैंड के संस्थापक पास्टर थे| उन्होंने चार दशकों में फैली अपनी सेवकाई के दौरान अमेरिका और विभिन्न देशों में अदभुत सेवकाईयों की स्थापना में खास भूमिका निभाई की। सन २००८ में पास्टर स्टीवेन्स की मृत्यु हुई| अपनी आम सेवकाई के दौरान उन्होंने बाल्टीमोर में मैरीलैंड बाइबिल कॉलेज एण्ड सेमिनरी की स्थापना और "द ग्रेस ऑवर" का विकास किया, जो एक एंजेल पुरस्कार अर्जित रेडियो टॉक शो है और आज भी उत्तरी अमेरिका में विभिन्न मसीही स्टेशनों और इंटरनेट के माध्यम से सुना जाता है।

यह पुस्तिका पास्टर स्टीवेंस द्वारा प्रचार किये गए एक संदेश से बनाई गई है।

जब तक अन्यथा न विस्तृत किया जाए, सभी कथन पवित्र शास्त्र बाइबल से हैं। जोर देने के लिए इटैलिक्स हमारी ओर से हैं।

GRACE PUBLICATIONS
6025 MORAVIA PARK DRIVE
BALTIMORE, MD 21206
कॉपीराइट © 1996
ग्रेस पब्लिकेशन ग्रेटर ग्रेस वर्ल्ड आउटरीच की एक सेवकाई है।

www.ggwo.org

हिन्दी अनुवादों का प्रकाशन
ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च
www.vashichurch.com

सामग्री की तालिका

भूमिका. ५

प्रति सुबह परमेश्वर से मुलाकात ७

निष्कर्ष. १९

रविवार की प्रार्थना सभा स्थल :

अथवा निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें :

ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च
ग्राउन्ड फ्लोर, मेघालय हॉउस,
सेक्टर – ३०ए, वाशी स्टेशन के
सामने, वाशी, नवी मुम्बई

कीमत – २५ रुपए

भूमिका

प्रति सुबह परमेश्वर से मिलने के बारे में प्रस्तावना के रूप में मौलिक पंक्तियों पर अपना ध्यान केंद्रित करें।

बाईबल के महान व्यक्ति परमेश्वर से सुबह मिलते थे।

"भोर को अब्राहम उठ कर उस स्थान को गया जहाँ वह यहोवा के सम्मुख खड़ा था।" (उत्पति १९:२७)

"भोर को याकूब उठा।" (उत्पति २८:१८अ)

"यहोशू सबेरे उठा।" (यहोशू ३:१अ)

"दाऊद सबेरे उठा।" (१ शमूएल १७:२०अ)

"[वे शिष्य] भोर होते ही मन्दिर में गए।" (प्रेरितों के काम ५:२१अ)

"भोर के दिन निकलने से बहुत पहले, [यीशु] उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहाँ प्रार्थना करने लगा।" (मरकुस १:३५)

यीशु मसीह स्वयं परमेश्वर था, पर अपने स्वर्गीय पिता से भोर के समय मिलता था। परमेश्वर के प्रबन्ध परमेश्वर के उन लोगों के पास आते हैं जो उसे भोर के समय खोजते हैं ।

सामर्थ्य सुबह के समय मिलती है।

"तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते होते क्या हुआ कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों हो

गया; और मिस्री उल्टे भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उनको समुद्र के बीच में ही झटक दिया।" (निर्गमन १४:२७)

हम परमेश्वर की महिमा सुबह के समय देखते हैं।

"और भोर को तुम्हें यहोवा का तेज देख पड़ेगा।" (निर्गमन १६:७अ)

आनंद सुबह में आता है।

"क्योंकि उसका क्रोध तो क्षण भर का होता है, परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है। कदाचित रात को रोना पड़े, परन्तु सबेरे आनंद पहुँचेगा।" (भजन संहिता ३०:५)

प्रति सुबह वह विश्वासी के कान सुनने के लिए खोलता है।

"प्रभु यहोवा ने मुझे सीखने वालों की जीभ दी है कि मैं थके हुओं को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूँ। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूँ।" (यशायाह ५०:४)

परमेश्वर कि करूणा और दयालुता कभी समाप्त नहीं होती।

"प्रति भोर को वह नई होती रहती है।" (विलाप गीत ३:२३अ)

प्रति सुबह वह विश्वासी का शरण स्थान है।

"भोर को तू उनका भुजबल, संकट के समय उनका उद्धारकर्ता ठहरा।" (यशायाह ३३:२ब)

प्रति सुबह परमेश्वर से मुलाकात

प्रति सुबह परमेश्वर से नियमित रूप से मिलना और उससे सहमत होना हमारी आत्मिक उन्नति को बनाए रखने के लिये उतना ही जरुरी है जितना शारिरिक जीवन के लिये साँस लेना| फिर भी, बहुत से मसीही परमेश्वर का वचन उनके जीवनों के बारे में जो कहता है, उससे सहमत नहीं होते हैं| इसका कारण यह है कि उनके प्राण धूल में पड़े रहते हैं (भजन संहिता ११९:२५)|

अपनी स्वाभाविक प्रवृति में इन्सान अपनी दिनचर्या परमेश्वर की बुद्धि, मार्गदर्शन, और निर्देशों पर निर्भर रहे बिना गुजार देता है| इसलिये, वह अपने पुराने पापी स्वभाव से ऐसे विचार ग्रहण करता है, जो परमेश्वर के विचार नहीं होते हैं| यशायाह ५५:८ में कहा गया है, "यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है|"

विश्वासी होने के नाते, जब हम सुबह उठते हैं, तो कुछ और करने से पहले पहला काम हमें यह करना है कि हम अपने दिन के सम्बन्ध में परमेश्वर के साथ एकता रखने का निश्चय करें| यही बात नीतिवचन ८:१७ में कही गयी है, "जो मुझसे प्रेम रखते हैं उनसे मैं भी प्रेम रखता हूँ और जो मुझको यत्न से उठकर तड़के खोजते हैं वह मुझे पाते हैं|" पहली बात जो हम महसूस करते हैं वह यह है कि परमेश्वर जो है उसके फलस्वरूप उसकी ओर भावना|

परमेश्वर अपनी सन्तानों से प्रेम करता है, और उसके पास हमारे द्वारा सामना की जा रही प्रत्येक आवश्यकता, दबाव, और प्रलोभन के लिये समाधान होता है| वह हमारे लिए मरा, और सारे संसार के पापों का मूल्य चुकाया| यह असीमित प्रायश्चित (unlimited atonement) है| जब हम इन बातों पर कुछ समय तक विचार करते हैं, तब हम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेम से अभिभूत (overwhelmed) हुए बिना नहीं रह पाते हैं| "हम इसलिये उससे प्रेम करते हैं क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया|" (योहन्ना ४:१९)

दूसरी बात यह है कि हमें परमेश्वर की आराधना और प्रशंसा करनी चाहिए| हम कैसे परमेश्वर की प्रसंशा करना भूल सकते हैं, जब उसने हमें स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार के आशिष दिये हैं (इफिसियों १:३)? उसके बाद, हमें परमेश्वर की शांत और धीमी सी आवाज को ध्यान देकर सुनना है (१ राजा १९:१२ब)| यह आवाज सुनाई देनेवाली आवाज नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के द्वारा हमारी आत्मा के साथ वार्तालाप है| इसके द्वारा हम यह तय कर सकते हैं कि क्या ऐसी कोई चीज है या नहीं जिस पर परमेश्वर आज हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहता हो| हमें हमारे पहले से सोचे हुए विचारों (preconceived notions) को रुकावट का मौका दिए बगैर परमेश्वर को स्वयं से बाते करने का अवसर देना चाहिये| सतर्कता के साथ, हम नि:स्वार्थ रूप से परमेश्वर की सुनते हुए समय बिताना सीखते हैं|

तीसरी बात यह है कि यदि हम परमेश्वर से प्रति सुबह मिलना चाहते हैं, तो हमें परमेश्वर के सामने नम्र होना होगा (याकूब ४:१०)। दिन भर की जिम्मेदारियों पर ध्यान लगाने के बदले, हम परमेश्वर से अपने दिलों में यह कह सकते हैं, "मैं यह विश्वास करता हूँ कि आज की इस सुबह आप अपनी प्राथमिकताएँ (priorities) मुझे बताना चाहते हैं। आपका प्रतिनिधि और दास होने के कारण मैं आपसे ज्ञान और बुद्धि चाहता हूँ।" अव्यवस्थित (random) विचारों को हमारे मन से गुजरने देने के बदले परमेश्वर हमें अपने सामने चुपचाप रहना सिखाना चाहता है। १ थिस्सलुनिकियों ४:११ कहता है, "चुपचाप रहने के लिए अध्ययन करो।" क्या यह अचरज की बात है कि यशायाह ने कहा, "शांत रहने और भरोसा रखने में तुम्हारी ताकत है" (यशायाह १०:१५ब)?

नीतिवचन ८:३२-३३ इन्ही सिद्धांतों का उदाहरण देता है: "इसीलिये अब हे मेरे पुत्रों मेरी सुनो; क्या ही धन्य हैं वे, जो मेरे मार्ग को पकड़े रहते हैं। शिक्षा को सुनो और बुद्धिमान हो जाओ, उसके विषय में अनसुनी न करो।"

प्रार्थना के शान्त समयों (quiet times) के दौरान विश्वासी के रोजमर्रा के जीवन के लिये परमेश्वर अपने निर्देश व ज्ञान विश्वास योग्यता से देता है। "यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।" (याकूब १:५)

परमेश्वर हमें बुद्धिमत्ता देने में विश्वासयोग्य है, पर क्या हम विश्वासयोग्य हैं उससे मांगने में? विश्वासी की यह जिम्मेदारी है कि वह इन जरूरतों को परमेश्वर के सामने लाए| तुरन्त, हम परमेश्वर के साथ सहमत होने लगते हैं, और प्रभु विश्वास योग्यता से हमें अपना अनन्त का दृष्टिकोण दिखता है|

यह इतना जरूरी है कि हम प्रत्येक सुबह परमेश्वर को हमसे बात करने का नया मौका दें| बहुत से लोग कभी भी अपना दिन उस से मिलकर आरम्भ नहीं करते हैं| वे अपने आत्मविश्वास और झूठे भरोसे में यह सोचकर जीते हैं कि वे परमेश्वर के बगैर काम चला सकते हैं|

दाऊद ने अपनी एक अन्धकारमय परीक्षा के समय लिखा, "हे परमेश्वर मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है"(भजन संहिता ५७:७अ)| जब हम इस पुस्तिका को पढ़ रहे हैं, तो हमें मन लगाकर सतर्कता और संयम से परमेश्वर को सुनना चाहिए| तब, परमेश्वर बातें करेगा| सुबह हमारे प्रार्थना के शान्त समयों (quiet times) में जब परमेश्वर हमारे साथ होता है, तब हमें पूरे ध्यान के साथ उसे सुनने की और जो कुछ हम सुनते हैं उसमें विश्वास मिलाने की जरुरत है (इब्रानियों ४:२)| इस तरीके से विश्वास के विश्राम (faith-rest) की प्रवृति के साथ हम आसानी से और तुरन्त जो वह कहता है उस कार्य का परिपालन कर सकते हैं |

वचन का करने वाला न होना बहुत सुविधाजनक है (याकूब १:२२)| देह, पुराना पापी स्वभाव और संसार हमें कई

कारण बताएगा, कि क्यों जो हम सुनते हैं उसमें विश्वास न मिलाएँ| परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन को बहाने बनाकर टालना किसी भी विश्वासी की आत्मिक वृद्धि को अपंग बना देगा| हमेशा ध्यान रखें कि "धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा" (गलतियों ३:११ब)| बिना विश्वास के हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते हैं (इब्रानियों११:६अ)| "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है|" (इब्रानियों ११:१)

जब हम हर सुबह परमेश्वर से मिलते हैं, वह हमारे विचारों की नकारात्मकता का समाधान निकालने का समय है | हम पवित्र आत्मा को हमारे अन्दर के उन घमण्ड, स्वार्थ, और अनुमानों को दिखाने के लिए कह सकते हैं, जो हमें परमेश्वर के उद्देश्य से विचलित करते हैं| इस तरीके से हम अपना प्रत्येक बोझ और विचलन उसे देकर एक और नए दिन की नई शुरुआत कर सकते हैं|

अपने मन को परमेश्वर के समक्ष तैयार करना

एक मसीही इस बात को सुनिश्चित कर सकता है कि उसने अपने मन को दिन भर के लिये तैयार कर लिया है, क्योंकि परमेश्वर के वचन ने उसके प्राणों को हथिया लिया है| परमेश्वर के साथ प्रतिदिन बिताए प्रार्थना के शान्त समय (quiet time) के अनन्त के मूल्य को आंकना असंभव है! परमेश्वर के कहने के अनुसार ही करने के लिये प्रत्येक विश्वासी को तैयार रहना चाहिये; मनुष्य की वज़ह से नहीं, परन्तु मसीह की वज़ह से| परिणामस्वरुप, वह लोगों के

बन्धन में नहीं, परन्तु अपने आपको परमेश्वर के अधीन कर देगा| जब पौलुस ने २ कुरिन्थियों ८:५ में कहा, "... लेकिन पहले [उन्होंने] स्वयं को प्रभु को सौंपा, फिर परमेश्वर की इच्छा से हमें भी दे दिया", तब उसका यही मतलब था|

परमेश्वर से सुबह मिलना कितना आवश्यक है! दिन का आरम्भ करने से पहले परमेश्वर से मिलें| जब हम प्रयत्न करके इस समय को केवल परमेश्वर से मिलने के लिये रखेंगे, तब हमारा अंदरूनी मनोभाव शुरू से ही नम्रता का रहेगा| नम्रता वह गुण है जो परमेश्वर हमारे मनो में उस समय देखता है जब कि हमारे मन उसके समक्ष दीन और टूटे हुए रहते हैं (भजन संहिता ५१:१७)|

प्रत्येक सुबह पुराने पापी स्वभाव को क्रूस पर ले जाओ

हर दिन, किसी भी समस्या से निपटने की कोशिश करने से पहले हमें अपने प्राणों की भ्रष्टता (depravity) से निपटना सीखना होगा| "संपूर्ण सिर घावों से भर गया, और तुम्हारा ह्रदय दु:ख से भरा है|"(यशायाह १:५ब) मसीही के तौर पर, हमारा सामना हमारे दिलों के अन्दरूनी पाप से है| तब भी हमें याद रखना जरूरी है कि मसीह की करुणा और दयालुता हर सुबह नई और ताज़ी है (विलाप गीत ३:२२-२३)|

बहुत से स्त्री-पुरुष सालों की बुरी आदतों को नहीं छोड़ पाते हैं, क्योंकि वे अपने पुराने पापी स्वभाव से प्रति सुबह नहीं निपटते| अक्सर प्रतिक्रियात्मक ओर मिजाजी

(moody) होकर वे असुरक्षित और आत्मिक परिपक्वता (maturity) रहित होते हैं| परिणामस्वरुप, वे भक्ति की भावनाओं (affection) के स्थान पर अभक्ति की लालसा के रूपों (lust patterns) में व्यर्थता (sublimation) में गिर जाते हैं|

लालसा परमेश्वर की संपूर्ण मर्जी के बाहर कोई भी इच्छा करने का नाम है| आमतौर पर लालसा के रूप यह हैं – भौतिक (material) लालसा (भौतिक वस्तुओं की अत्यधिक इच्छा), शक्ति (power) की लालसा (दूसरों पर नियंत्रण करने की इच्छा), सराहना (approbation) की लालसा (दूसरों द्वारा मान्यता और प्रशंसा की इच्छा), शारीरिक (sensual) लालसा (परमेश्वर के वचन में दी गई सीमाओं के बाहर योन तृप्ति की प्यास), घमण्ड (दूसरों के ऊपर स्वयं को ऊँचा समझना), या जीवन की बारीकियों (details of life) पर अत्यधिक व्यस्तता (परिणामस्वरूप, परमेश्वर से व्यक्तिगत सम्बन्ध को आगे बढ़ाने में असफलता)|

लेकिन जब हम परमेश्वर को उन बाधाओं को विफल करने देते हैं, जो हमारे दिलों में "स्वयं" के जीवन (self-life) को सम्भाल कर रखती हैं, तब लालसाएँ हमारे विचारों को नहीं भर सकती| वे छः लालसा के रूप जो जगह लेने की कोशिश करते हैं, उनका निपटारा क्रूस पर होता है; हमारे निर्णय लेना शुरू करने से भी पहले, जब हम हर सुबह परमेश्वर से मुलाकात करते हैं|

अपने हृदयों की चौकसी करना

जब हम अपना आत्म-जीवन (self-life) प्रभु को दे देते हैं, तब हम परमेश्वर के वचन के द्वारा अपने हृदयों की सुरक्षा करने लगते हैं| हमें वचन सुनकर उसमें विश्वास मिलाना है (इब्रानियों ४:२) और उसका तुरन्त पालन करना है| तब यीशु मसीह की शक्ति के द्वारा हमें शैतान की चतुराई के सामने बहुत फायदा मिलेगा| जब हम मसीह में बने रहते हैं, हम विजयी होते हैं क्योंकि "...जो तुम में है, उस से जो संसार में है, बड़ा है"(१ यूहन्ना ४:४ब)|

हमें अपने हृदयों को स्वार्थी भावनाओं और आलसीपन, और दूसरों से अपनी तुलना करने से बचाना होगा|

"क्योंकि हमें यह साहस नहीं कि हम अपने आपको उनमें से ऐसे कितनों के साथ गिनें या उनसे अपने को मिलाएँ, जो अपनी प्रशंसा आप करते हैं, और अपने आप को आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से मिलान करके मूर्ख ठहरते हैं|" (२ कुरिन्थियों १०:१२)

इसके अलावा, हमें अपने दिलों को धार्मिक भावनात्मकता और अस्वस्थ भावनाओं से बचाना जरूरी है, जो हमें अनावश्यक रूप से विषयात्मक (subjective) बना देंगे और आसानी से जख्मी कर सकते हैं| हमारे प्राणों को परमेश्वर के वचन में श्रेणीगत उपदेश (categorical doctrine) के द्वारा सुरक्षित किया जाना आवश्यक है जिससे विषयात्मकता और जख्म गलत असर न पैदा कर सकें|

परमेश्वर का वचन, अनुग्रह के द्वारा, हमारे प्राणों का संरक्षक है।

परमेश्वर से उचित रूप में सम्बन्धित होना

परमेश्वर की उपस्थिति को अपने जीवन में प्रत्येक दिन अनुभव किए बिना हम मसीह की देह और जग में कभी भी प्रभावशाली नहीं हो सकते! कई बार, लोग अपनी शारीरिक थकान के कारण अपने हृदयों को सुबह परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार नहीं कर पाते हैं। पर यदि हम, दिन के आरम्भ होते मसीही सेवक के रूप में प्रार्थना का शान्त समय (quiet time) बिताते हैं, तब शारीरिक थकान की ओर हमारा ध्यान नहीं लगा रहेगा।

उसकी बजाय, भजन संहिता ११९:१५४ के अनुसार हम उसके वचन के अनुसार जिलाए जाएँगे।

हम में से कई इस बात का एहसास नहीं करते हैं, कि कई बार हमारा प्राण तकलीफ में है क्योंकि हम परमेश्वर के साथ प्रतिदिन समय बिताने को अहमियत नहीं देते। इन तकलीफों की जड़ यह है कि व्यक्तिगत तौर पर हम अपने जीवन की बारीकियों के लिए परमेश्वर के वचन (जैसे परमेश्वर देखता है!) से एकमत नहीं हुए।

कुछ लोग अपनी बचाव शैली (defense mechanism) से अपने पापी स्वभाव को बहुत प्रवीणता से छिपाने में इतने माहिर हैं, कि वे यह स्वीकार नहीं करते हैं कि उनको तकलीफें हैं। उनके द्वारा समस्याओं को छिपाने की कोशिश के नीचे असली कारण दबा रह जाता है। वे परमेश्वर से सही

सम्बन्ध न होने के कारण कई प्रकार की ग्लानियों से ग्रसित रहते हैं| तब प्रेम से परमेश्वर यह बताने की कोशिश करता है कि उसका आत्मा शोकित है (इफिसियों ४:३०), क्योंकि उन्होंने परमेश्वर से घनिष्ट सम्बन्ध के साथ दिन की शुरूआत नहीं की|

परमेश्वर से प्रति सुबह मिलना रोमांचक है| जब एक विश्वासी परमेश्वर के सामने नम्र और टूटा हुआ तथा लोगों के सामने नम्र होता है, तब उसके पास स्वयं को बचाने के लिए कुछ भी नहीं होता है, तब वह दिन में कई बार परमेश्वर के सामने उसको सुनने के लिये जाता है|

परमेश्वर अपनी ईश्वरीय बनावट प्रदान करता है

यद्यपि सब मसीही पापी हैं, फिर भी यह बहुत सुन्दर बात है कि हम उस सम्पूर्ण परमेश्वर से सम्पूर्ण बनाए गए संत बन कर मिल सकते हैं| परमेश्वर जो है उस वजह से हम उसकी आराधना और सम्मान कर सकते हैं, यह इकरार करते हुए कि हम मसीह से अलग होकर कुछ भी नहीं कर सकते (योहन्ना १५:५ब)| हम अपने मिजाज (moods) या विषयत्मकता (subjectivity) को हमारी प्रवृति पर हावी नहीं होने देते और न ही नकारात्मक भावों (negative attitudes) को हमारे पास आने देते| उसकी बजाय हम परमेश्वर के द्वारा हमारी प्रकृति में निवास के ज़रिये से नम्र प्रकृति की ओर समर्पित हो जाते हैं| जब हम पूरी तरह से मसीह पर ध्यान लगाते हैं, तब परमेश्वर का अलौकिक स्वभाव हमारे इन्सानी व्यक्तित्व से दिखाई देता है|

विश्वास के द्वारा शुद्ध किये जाने पर हम प्रति सुबह परमेश्वर के समक्ष जा सकते हैं| परिणामस्वरुप, दिन भर हम परमेश्वर के विचारों को सोचे बिना कोई शुरुआत (initiate) नहीं करेंगे | प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभाविक गुण व सामर्थ्य होते हैं – उन सब पर पवित्र आत्मा का नियंत्रण होना चाहिए| परमेश्वर का वचन कहता है, "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों ३:२३)| हर विश्वासी को धरती पर अपना दिन शुरू करने से पहले स्वर्ग से सलाह लेना चाहिए! हम परमेश्वर से एकमत हो जाएँ, तब उसे श्रेणीगत (categorical) उपदेशों के द्वारा वचन व प्रार्थना के माध्यम से हम अपने दिमागों को संचालित करने देते हैं|

"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो|" (फिलिप्पियों २:५)

प्रतिदिन के दबाव व समस्याओं के कारण व्याकुल हो जाना बहुत आसान है| फिर भी यीशु नहीं चाहता है कि कोई भी उन समस्याओं में व्यस्त रहे| इसके बदले, वह चाहता है कि हम उसके द्वारा दी गई पूर्वयोजना में अपना ध्यान लगाएँ| वह चाहता है कि प्रत्येक विश्वासी प्रतिदिन एक ऐसा समय गुजारे जहाँ हम दबावों व समस्याओं पर विजय पाने के लिये उसकी सामर्थ्य ग्रहण करें| ऐसे समयों में वह हमें इन्सानों के गलत व्यवहारों को निभाने के लिए अपना प्रेम और धीरज देता है|

व्यस्त मसीही सेवकों, व्यापारियों, माताओं, पिताओं, बच्चों, व पास्टरों के लिये यह समय कितना अच्छा प्रावधान है| परमेश्वर से हर सुबह मिलना हमारे दिलों के भावों को प्रतिक्रिया (reaction) की बजाय मेल मिलाप की सेवकाई में लगे रहने का उत्साह देता है|

हम परिस्थितियों के शिकार होने के बदले विजेता होंगे क्योंकि हम अपने हृदयों पर प्रति सुबह मसीह का शासन पहचानेंगे| वाकई में परमेश्वर हमें यह कहकर राह दिखाएगा, "मार्ग यही है, इसी पर चलो" (यशायाह ३०:२१अ)|

निष्कर्ष

विश्वासी होने के नाते हमें परमेश्वर द्वारा उसकी योजना के लिये ठहराए गए समय पर भरोसा करना चाहिये|

हमें परमेश्वर से सुबह मुलाकात करनी है और उस दिन के लिए उसकी अनन्त की योजना में हमारे योगदान के विषय में सटीक परिभाषा ग्रहण करनी है| बहुत से विश्वासी परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा के शासन की शक्ति में विजयी जीवन नहीं जी रहे हैं| परमेश्वर के द्वारा उसके विचारों से हमारे मनों पर शासन इकलौता तरीका है, जिससे हर दिन के दबावों और परीक्षाओं का सामना किया जा सकता है| और जब तक प्रभु यीशु मसीह के साथ हमारी नजदीकी संगति (intimate communion) न हो, तब तक यह असम्भव है कि हम उसका जीवन दूसरों को प्रदान कर सकें|

जब तक हम यीशु मसीह को जानने में व्यक्तिगत समय न बिताते हों, तब तक हम जीवन की हालातों में कैसे उसका प्रतिनिधित्व कर पाएँगे? यह हम सबके लिए चुनौती है कि हम परमेश्वर के साथ के अपने सुबह के शांत-समयों को अर्पण करें और तरसें, जिससे उसकी उपस्थिति दिन भर लोगों को प्रदर्शित हो!

परमेश्वर सच में तुम्हारी परवाह करता है

यीशु तुमसे गहरा प्रेम करता है। बहरहाल, यह तथ्य कि सभी ने पाप किया है, हमें परमेश्वर से अलग करता है (रोमियो ३:२३; ६:२३)। फिर भी, परमेश्वर तुम्हारे लिए परवाह करता है और वह अपना प्रेम तुम्हारे साथ बाँटने के लिए एक तरीका प्रदान करता है।

इन्सान के लिए यीशु मसीह का प्रेम इतना महान था कि वह आया और मानव जाति के सभी पापों के लिए क्रूस पर मरा। उसने तुम्हारे लिए अपना लहू बहाया जिससे तुम क्षमा पा सको और अनन्त जीवन पाओ।

इकलौती चीज जो वह तुमसे माँगता है कि तुम साधारण विश्वास में अपनी ओर उसके चरित्र और प्रेम पर भरोसा करते हुए और उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हुए, उसके पास आओ। "जो कोई भी प्रभु के नाम को पुकारेगा, वह बचाया जाएगा।" (प्रेरितों के काम २:२१)

बस प्रार्थना करें, *"प्रिय यीशु, मैं जानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ। मैं तुम्हें अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता हूँ। मुझे इतना प्रेम करने के लिए धन्यवाद कि तुमने मेरे लिए जान दी जिससे मैं तुम्हारे साथ अनन्त जीवन बिता सकता हूँ, आमीन।"*

वह वादा करता है कि वह कभी तुम्हे प्रेम करना बंद नहीं करेगा और न ही वह कभी तुम्हें छोड़ेगा या त्यागेगा (इब्रानियों १३:५)। बाइबिल पढ़ने, प्रार्थना करने, और एक अच्छे बाइबल पर विश्वास करने वाले चर्च में भाग लेने के द्वारा उसके साथ अपने संबंध का विकास करें।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च
वेबसाइट: www.vashichurch.com

हिन्दी अनुवादित संस्करण के विषय में

इस पुस्तिका की आत्मिक जीवन में कीमत को ध्यान में रखते हुए ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च की टीम के सदस्यों के योगदान से इसका अनुवाद और प्रकाशन किया गया है। स्थानीय तौर पर अधिक जानकारी के लिए आप हमें संपर्क कर सकते हैं:

ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च (GGNMC)
वाशी, नवी मुंबई, भारत
+ (91) 97020 81387
ई-मेल: mail@vashichurch.com
वेबसाइट: www.vashichurch.com

आत्मिक परामर्श के विषय में : www.vashichurch.com

ग्रेटर ग्रेस कलीसिया के विभिन्न स्थानों पर चर्च, प्रार्थना सभाएं, बाइबल स्कूल, यूथ सेवकाई, काउन्सेलिंग सेवकाइयां हैं कृपया जानकारी के लिए संपर्क करें :

मुंबई एवं उत्तर भारत : www.ggfmumbai.org
बेंगलुरु एवं दक्षिण भारत : www.ggfblr.org

पास्टर कार्ल एच स्टीवेंस की हिन्दी पुस्तिकाओं की सूची :

बस परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने दो
प्रतिदिन भोर में परमेश्वर से मुलाक़ात
परमेश्वर से खुलकर ग्रहण करो
पवित्र आत्मा से तुम्हारा सम्बन्ध कैसा है
बीमा न्याय आसनः दुःख या आनन्द में प्रस्तुति
सिंहासन के शब्द
साजिश का उत्थान

Grace Publications